2.6.2 कार्यक्रम के परिणामों की प्राप्ति, कार्यक्रम के विशिष्ट परिणामों और पाठ्यक्रम के परिणामों का मूल्यांकन संस्थान द्वारा किया जाता है

Attainment of Programme outcomes, Programme specific outcomes and course outcomes are evaluated by the institution

कार्यक्रम के परिणामों की प्राप्ति, कार्यक्रम के विशिष्ट परिणामों और पाठ्यक्रम के परिणामों का मूल्यांकन विश्वविद्यालय द्वारा किया जाता है । यहां के सभी पाठ्यक्रम भारतीयज्ञानपरम्परा के आश्रित हैं। आधुनिकपाठ्यक्रम, आधुनिकज्ञानसम्मिश्रित एवं विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रमों में प्राच्यज्ञानबिन्दु और आधुनिकज्ञानबिन्दुऐं बिम्बित हैं। इन सभी पाठ्यक्रमों का निर्माण, विषयसंयोजन, परिणामों का मूल्यांकन और निर्माण का औचित्य इन सभी की आलोचना करके पाठ्यक्रम अध्यापन के लिए स्वीकृति की गई है। अध्यापकगण शास्त्रीयविषयों जैसे - व्याकरण, साहित्य, ज्योतिष, वेदान्त, न्याय इत्यादियों का मूल्यांकन भी समय-समय पर करते हैं।

पाठ्यक्रम का परिचय प्रदान – प्रवेश के समय व्याकरण, साहित्य, ज्योतिष, वेदान्त इत्यादि पाठ्यक्रमगत वैकल्पिक शास्त्रविषयों का सामान्य परिचय किया जाता है। सम्बद्धपाठ्यक्रम के समिति सदस्यगण उस कार्य का सम्पादन करते हैं और छात्र द्वारा चुने हुए पाठ्यक्रम का पाठ्यपत्रों का भी परिचय दिया जाता है। पाठ्यक्रमों का क्या विशेष प्रयोजन है, यह भी बतलाया जाता है।

पाठ्यांश का पूरण – निर्दिष्ट समय पर अध्यापक द्वारा पाठ्यांश को समापन किया जाता है, इसलिए प्रत्येक विषय का अध्यापक द्वारा पाठ्य पत्र प्रत्येक मास पढ़ाये जाने वाले भाग का विभाग किया जाता है तथा प्रति मास पाठ्यांश पूरा किया जाता है, अतः तद्विषये पुनरवलोकन और परीक्षासिद्धता करने में सुविधा होती है।

उपस्थिति – अध्यापन में छात्रों की उपस्थिति पाठ्यक्रम को परिणाम निर्धारण करती है। परीक्षा में सम्मिलित होने के लिए न्यूनतम 75% उपस्थिति अनिवार्य है।

दत्तकार्य – छात्रगण निर्दिष्ट पाठ्यविषयों में पी पी टी द्वारा ग्रन्थों का विषयोपस्थापन, आवलीनिर्माण, लघु समीक्षा इत्यादि कार्य करते हैं।

अतिरिक्त कक्षा – आन्तरिकमूल्यांकन द्वारा छात्रों का क्रमितमापन होता है। सामान्यतः दो भागों में विभाग किया जाता हैं, तद्यथा - मन्द अध्ययनकर्ता, मध्यम अध्ययनकर्ता और अग्रेसर अध्ययनकर्ता। इन दोनों का स्तर सुधारने के लिए प्रयत्न अध्यापक करते है।

सत्रीय परीक्षा – छात्रों का परीक्षाफल द्वारा पाठ्यक्रमों का गुण निर्धारण किया जाता है। विश्वविद्यालय द्वारा परीक्षा, मूल्यांकन, फलितांश का पट्टिका निर्माण, उसकी घोषणा और अङ्कतालिकाप्रदान किया जाता है। इन अवान्तक्रियाद्वारा पाठ्यक्रमों का परिणाम जाना जा सकता है। सञ्चालितपाठ्यक्रमों के अन्त में सत्रीय परीक्षा का जाती हैं, तत्पश्चात् प्रथम, द्वितीय इत्यादि श्रेणी निर्धारित की जाती है।

नियुक्ति – विश्वविद्याल में पाठ्यक्रम समाप्ति के पश्चात् विभिन्न क्षेत्रों में प्राप्तपदवी वाले वृत्ति प्राप्त करते हैं। शिक्षाशास्त्रि पाठ्यक्रम समाप्ति वाले अनेक राज्यों के प्रौढशालाओं में वृत्ति प्राप्त किये। कुछ बैंक में, कुछ नागरिक सेवादियों में बढ़ चढ़ कर भाग लिए। उस परीक्षा में सफल भी हुए। NET, CTET इत्यादि उद्योगवार परीक्षाएँ उत्तीर्ण हुए। अनेकों ने योग, वास्तु-ज्योतिष इत्यादि कोशलाधारित पाठ्यक्रमों को समाप्त करने के पश्चात् स्वयं उद्योग प्रारम्भ किया।

विश्वविद्यालय द्वारा पाठ्यक्रमों के परिणाम और निष्पति का मापन विधान किया गया है। यहाँ शास्त्री, आचार्य, शिक्षाशास्त्री, विद्यावारिधि प्रमाणपत्र, इत्यादि पाठ्यक्रम चलाये जाते हैं। ये सभी पाठ्यक्रम निर्दिष्ट उद्देशों के साथ प्रवृत होते हैं। उद्देश्यानुगुण उनके क्रियान्वार्थ कार्य विधान किये जाते हैं। प्रवेशसमये दिया गया शास्त्रीयपाठ्यक्रमों का परिचय द्वारा छात्रगण विविधशास्त्रों में विभक्त होते हैं। नामितमापनद्वारा आसक्तिनिर्धारण सम्पादित किया जाता है। शिक्षाशास्त्रिपाठ्यक्रम में मनोविज्ञानादि द्वारा अन्तरितमापन में होता हैं। पाठ्यक्रमों में प्रतिसत्र सत्रीयपरीक्षा प्राप्तफल को देखकर आनुपातिक माप्न किया जाता है। इसलिए पाठ्यक्रम में परिवर्तन और परिवर्धन करने के लिए चिन्तन किया जाता है।